वाल्डेट

लेओन जैसे बच्चों को न जाने क्यों ईश्वर समय से पहले ही अपने पास बुला लेते हैं।वाल्डेट जैसी माँओं को वो इसी रूप मे सजा देते आये हैं।इसे मैने अपनी संस्कृति मे कदम कदम पर देखा है।यूरोप मे पहली बार इसे भोगने का दुर्भाग्य भी शायद मेरी ही किस्मत मे बदा था।लेओन अपने कुछ दोस्तों के संग एक प्लाचीने मे नहाने गया था।किनारे पर ही अचानक उसका पॉव फिसला और उसका सिर एक पत्थर से जा टकराया।वो बेसूध पानी मे जा गिरा।अपने बीच लेओन को न पाकर उसके दोस्त पलटे।घुटने भर पानी मे उन्हे लेओन की तैरती लाश मिली।अपने बारहवें वर्ष मे ही लेओन ने अपनी मॉ से विदा ले लिया।

लेओन की मॉ मेरी कलिग और मेरी सिनियर थी।वो उम्र मे मुझसे एक वर्ष बड़ी थी।हमारे चैम्बर्स साथ साथ थे।अचानक वो चिखती मेरे चैम्बर मे आई और एक दीवार पर मुक्के मार मार कर ऊँची आवाज मे रोने लगी।झट पट मै उठाःक्या बात है क्या बात है कहता उसे दोनो बॉहो से जकड़ लिया।पलक झपकते डिपार्टमैन्ट के दूसरे लोग भी मेरे चैम्बर मे आ जूटे।ये अचानक उसे क्या हो गया है!ये सवाल सभी मुझसे किये जा रहे थे।मै उन्हे क्या बताता!वाल्डेट का रोना अब हिचकियों मे बदल गया था।वो मेरे कन्धे पर सिर रखे अनवरत रोये चली जा रही थी।जब वो थोड़ी सहज हुई तो बताई कि थोड़ी देर पहले मोन्टेनेगरो से उसकी चचेरी बहन का फोन आया था।लेओन अब इस संसार मे नही रहा।सारा डिपार्टमैन्ट यह सुन कर स्तब्ध रह गया।

आज से दो वर्ष पहले हमारे ही क्लिनिक मे लेओन के आई टयूमर का ऑपरेशन हुआ था।लगभग जाते लेओन को प्रो फ्योस्टर साफ साफ मौत के मुँह से निकाल लाये थे।हमारे यहॉ ये ऑपरेशन फ्राऊ डाक्टर लॉग के प्रयासों और उनकी पहुँच से सम्भव हो सका था।लेओन के पास जर्मनी का कोई हेल्थ इनस्योरेन्स नही था।यहॉ तक कि वो हमारी कलिग का लीगल बेटा भी नही था।डाक्टर लॉग हमारे डिपार्टमैन्ट की हेड थीं।जब उन्हे लेओन के गुजर जाने का पता चला.तब वो रोने ही लग पड़ी।सारे डिपार्टमैन्ट मे शायद ही कोई रहा होगा.जिसकी ऑखे लेओन नम न कर गया हो।ऑपरेशन से एक दिन पहले वो थोड़ी देर के लिए हमारे डिपार्टमैन्ट मे आया था और सबका मन मोह लिया था।डाक्टर लॉग तो उसे अपने गले से हटाने का नाम ही नही ले रही थीं।उसे हरी ऑखें अपनी मॉ से मिली थीं।बड़े मोहक व्यक्तित्व का वो मालिक था।

सन उन्यासी मे इस्ट और वेस्ट जर्मनी की दीवारें गिराई जा चुकी थीं।अब ये एक देश था।कामों पर हर जगह इस्ट जर्मन्स को प्राथमिकतायें दी जा रही थी फिर भी इस केमिस्ट पद के लिए डॉक्टर लॉग ने मुझे चूना।ये मेरा सौभाग्य ही था।इस फार्मास्वायटिकल डिपार्टमैन्ट मे बत्तीस जन काम करते थे।ये काम पर मेरा पहला दिन था।मुझे लेओन की मॉ के संग काम करना था।उनका पूरा नाम वाल्डेट वियान्का है.पर उन्होने ने ही मुझसे कहा था कि मै उन्हे वाल्डेट और तुम कहके पुकारूँ।वो मुझे प्रमोद कहके पुकारना चाहती थीं।मैने अपने आप को उनके काफी करीब महसूस किया था।मेरे और उनके अलावे डिपार्टमैन्ट के दूसरे लोग जर्मन ही थे।वाल्डेट बड़े निग्रह और अर्न्तमुखी स्वभाव की थी।काम के अलावे हमारे बीच बात चीत का कोई दूसरा या तीसरा विषय नही होता था।कैसी हो! का जवाब भी वो इशारे से ही दिया करती थी।उसके बारे मे कुछ जानना एक सदा के लिए बन्द किये गये दरवाजे पर थपकियॉ देने जैसा था।कभीं कभीं मुझे बड़ी घूटन सी होती थी।मै उससे कभीं अमिञवत नही हुआ और न ही कभीं उसका बुरा ही चाहा.पर समय के साथ थोड़ा रिजर्व अवश्य हो गया।एक दो दूसरे कलिगों से सम्पर्क बढा कर उन्ही के साथ ब्रेकों मे जाने लगा।दूरी से दूरी ही तो बढती है।सुबह की कॉफी जो मै उसके साथ पीता था.बन्द कर दिया।जब तब वो अपने हॉथों की बनाई पेस्ट्रियॉ मेरे टेबल पर रख जाती थी.जिसे मै उसकी नजर बचा कर कूड़े मे फेंक आता था।मन के अन्दर कहीं न कहीं मै आहत अवश्य था।ये ठीक है कि हर इन्सान के पास अपनी गोपनीयतायें होती है जिन्हे वो सबके सामने नही रखना चाहता है.पर वो बर्लिन के किस इलाके मे रहती है वो शादीसुदा है या अकेली है या फिर मोन्टेनेगरो मे उसके कौन से सगे सम्बन्धी रहते है.इन बातों मे कौन सी गोपनीयता है!

एक नोवो इटालिया नामके इटेलियन रेस्त्रॉ मे हमे डिपार्टमैन्ट की तरफ से एक्समस की पार्टी दी गई थी।मै वहॉ जरा देर से पहुँचा था।वाल्डेट अपने बगल की कुरसी मेरे लिए ही छेंक रखी थी।मुझे देखते ही वो बगल वाली कुरसी पर रखी अपना बैग और जैकेट हटाने लगी।उसे अनदेखा करके मै एक दूसरे कलिग के बगल मे जा बैठा।वाल्डेट के कोर नम होने को आये थे।रह रह कर वो छत निहारने लग पड़ती थी।उसे अपने ऑसू जो छुपाने पड़ते थे।ये पार्टी रात के ढाई बजे तक चली।बर्फो का गिरना बन्द होने का नाम ही नही ले रहा था।दो दिन से अनवरत बर्फ गिरती जा रही थी।दूर दराज तक न तो कोई टैक्सी दिख रही थी और न कोई बस।सरकारी डम्फर रास्तों के बर्फ हटाने मे लगे हुए थे।सिवाय पैदल के मुझे कोई दूसरा रास्ता सूझ नही रहा था।तभी वाल्डेट मेरे पास आईःचलो तुम्हे घर तक छोड़ देती हूँ!आहिस्ते से उसका हॉथ अपने कन्धे से हटा कर मैने अपने जैकेट के कॉलर खड़े किये और पैदल ही घर चल पड़ा।

इस अमिञवता का उल्लेख वाल्डेट ने काफी बाद के दिनों मे एक बार ऐसे ही किया था।

जब हम ड्रेस्डेन की ट्रीप पर गये थे तब वापसी पर वाल्डेट मुझे अपने साथ ले जाना चाहती थी।ना करने पर बड़ी ही थकी आवाज मे कहने लगीःबिना कारण बताये मुझे सताना तुम्हे क्यों अच्छा लगता है!

ःकिसी एक रस्ते पर दो राहगीर बिना एक दूसरे से बात किये चल कैसे लेते हैं!मै किसी मंजिल की बात नही कर रहा।मै सिर्फ साथ चलने की बात कर रहा हूँ।

ःतुम मेरे बारे मे क्या जानना चाहते हो!

ःकुछ नही।मेरी बॉहे तो छोड़ो।सब देख रहे हैं हमारी तरफ।

ःदेखने दो उन्हे।देखने दो सभी को।देखते ही देखते वाल्डेट की ऑखें भींगने को आई थीं।

बिना कुछ कहे मै सामने वाली सीट पर जा कर बैठ गया।हम ड्रेस्डेन से बाहर निकले ही थे कि दूर कहीं आसमान मे बिजली चमकी और बादलों ने गरजना शुरू कर दिया।तूफानी हवायें बहने लगी और फिर मोटी मोटी बूँदें गिरने लगीं।तेज चलते वाईपर के बावजूद

कुछ दिखाई न देता था। पहले पार्किंग लाऊन्ज के आते ही वाल्डेट उसमे जा घूसी। पास के घने जंगल मे लगें ओकों को ये हवाये जड़ समेत उखाड़ देने मे लगी हुई थीं। गाड़ी की छत पर पड़ती वर्षा की बौछार एक घन की तरह बरस रही थी। देखते ही देखते मीलों लम्बा लाऊन्ज गाड़ियों से जा भरा था। खिड़की के सीसे से सर टिकाये मै अपनी ऑखें मूँदे वाल्डेट के ही बारे मे सोचे जा रहा था। कभीं कभीं किसी को करीब से जानने की चाह और उससे प्रेम कर बैठने के दरम्यान कोई विशेष अन्तर नही होता है। प्रारम्भ मे ये जान लेना बड़ा मुश्किल होता है। मेरा भी कुछ यही हाल था। वाल्डेट का सौन्दर्य एक उदासी मे लिपटा साफ सूथरा और शान्त सौन्दर्य था और यही उसे दूसरों से अलग करता था। वो बड़े नपे तूले शब्दों मे बातें करती थी।
अब मै ब्रेकों मे वाल्डेट के संग ही रहने लगा। उसकी बहन उसे मोन्टेनेगरो से तरह तरह के मसालेदार सौसेजेस और मीटें भेजा करती थी। इस तरह की सौसेजेस बर्लिन मे नही मिला करती थी। इसके अलावे कई तरह की सब्जियॉ और मशरूम्स भी सिरकों या जैतून के तेलों मे प्रिजर्व्ड मोन्टेनेगरो से उसे मिला करती थीं। हर दिन ही वाल्डेट उन्हे एक प्लेट मे सजा कर मेरे टेबल पर रख जाती थी। वाल्डेट के पिता जागरेत्स मे फॉरेस्ट ऑफिसर थे. पर ग्योरनी मे उनके पास एक बहुत ही बड़ा फार्म था। इस फार्म का काम वाल्डेट के चाचा देखा करते थे। वाल्डेट भी अपनी मॉ के साथ अपने गॉव मे ही रहती थी। वो इकलौती बेटी थी। उसकी चचेरी बहन भी इकलौती ही थी। इनके फार्म मे अनाज तो पैदा किया ही जाता था. पर आमदनी का मूख्य स्रोत पशुपालन था। सैकड़ो सूअर. गायें मछलियॉ और कबूतर इनके फार्म मे पाले गये थे। बीसों लोग इस फार्म मे काम करते थे। स्कूल की पढाई वाल्डेट ने गॉव मे ही की. पर बाद की पढाई के लिए उसे जागरेत्स आना पड़ा। वहॉ आने के बाद उसे पता चला कि उसके पिता शराबी हैं और एक दूसरी औरत से भी उनका सम्बन्ध है. जो उनके घर पर एक नौकरानी की हैसियत से रहती थी। इन दोनो गुणों के बावजूद अपने क्षेत्र मे उनका बड़ा मान सम्मान था। उन्हे शहर मे सरकारी मकान और एक सरकारी जीप ड्राइवर सहित मिली हुई थी. साथ मे कई नौकर चाकर भी। कईगेस्टहाऊसेज भी उनके अर्न्तगत थे. जो जन्गलो मे शिकार पर आने वाले बड़े बड़े अफसरों और मिनिस्टरों के लिए बने हुए थे। आये दिन जन्गलों मे शिकार किये गए जन्गली सूअर हिरण बारहसिंघे ग्रील किये जाते थे। दवाके दारू छना करती थी। आस पड़ोस की रंडियॉ भी बुला ली जाती थीं।
वाल्डेट की निरक्षर मॉ के लिए ये सारी बातें निरर्थक थीं। उनका जीवन गॉव और अपने सगे सम्बन्धियों तक ही सीमित था। गॉव मे उनका मान सम्मान था और कानूनन उनके पास एक पति था। अपने पति के नाक मे नकेल डालने की वो कोई आवश्यकता नही समझती थीं। वाल्डेट की छुट्टियॉ गॉव मे ही बीतती थी। अगर उसका वश चला होता. तो वो शहर कभीं न जाती। अपनी चचेरी बहन और अपनी सहेलियों के साथ उसका चहकता बचपन अक्सर उसे शहर मे उदास कर देता था। उसके पिता नशे मे धुत्त सोफे पर पसरे होते थे। वाल्डेट चुपचाप जाकर उनके बदन पर कम्बल रख कर उनके पीठ पर पसर जाती थी।
वाल्डेट के पिता का कहना था कि पढे लिए इन्जीनियर डाक्टर्स गॉव की लड़कियों के नसीब मे हैं ही नही। गॉवो मे तो वो झॉकने तक नही आते। वो अभीं यूनिवर्सिटी मे भी न आई थी कि उसके विवाह की बातें चलने लगी। वाल्डेट एक पढी लिखी खूबसूरत लड़की थी। उसके लिए वर ढूँढना उतना आसान नही था। काम और शराब के अलावे जितना भी वक्त उसके पिता के पास होता था. वो उसके वर की तलाश मे गुजर जाता था। एम फार्मा के पहले वर्ष मे उसका विवाह जागरेत्स के ही एक नामी गरामी इन्डस्ट्रीइलिस्ट के इकलौते बेटे से तय हो गया. जो उन दिनों बौस्टन मे बिजनेस मैनेजमेन्ट की पढाई कर रहा था। तभी एक दुर्घटना हो गई। पथरीले रास्ते पर वाल्डेट के पिता अपनी जीप न सम्हाल सके और हजारो मीटर नीचे एक खाई मे जा गिरे। उनकी लाश निकालने के लिए एक सरकारी हेलीकॉप्टर को बुलवाना पड़ गया था। वाल्डेट का विवाह एक वर्ष के लिए टाल दिया गया।
विवाह के बाद वाल्डेट तीन महीने अपने पति के साथ जागरेत्स मे रही. फिर उसका पति अमेरिका वापस चला गया। कुछ महीनों के लिए वाल्डेट अपने गॉव ग्योरनी वापस आ गई। रास्ते भर मेरे दिमाग मे वाल्डेट का कहा गूँजता रहाःअगर ये विवाह सदा के लिए टल जाता. तो तुम आज मुझे इस हालत मे नही पाते। उसके इस कहे का आशय मुझे काफी दिनो के बाद समझ मे आया।
मेरे और वाल्डेट के दरम्यान बात चीत का कोई सोता तो न फूटा था. पर जब हम साथ साथ अपने ब्रेक मे बाहर के लॉनों मे घूमने जाते थे. तब वो खुद ही कुछ न कुछ अपने बारे मे बताने लग पड़ती थी। यदा कदा वो मेरे बारे मे भी पूछती थीःअकेले ही रहते हो प्रमोद!
ःमै शादीसुदा नही हूँ।
ःशादी क्यों नही की!
ःकिससे शादी कर लेता!जिसे भी अप्रोच करता हूँ वो या तो शादीसुदा होती है या फिर किसी से जूड़ी मिलती है। यही सोच कर संतोष कर लेता हूँ ईश्वर के घर देर है अन्धेर नही है।
ःतुम्हे तुम्हारा अकेलापन परेशान नही करता!
ःमैने आज तक अपने को अकेला कभीं पाया ही नही। इस यंत्रणा से मै सदैव बचा रहा। एक जमाना सा हो गया मुझे अपने मॉ बाप से अलग हुए। अब तक न जाने कितने लोगों से मिला और उनके साथ अपना और उनका जीवन बॉटा. ये मुझे याद नही है। अगर कुछ याद है. तो बस इतना ही कि जिस प्रकार किसी की खुशी मेरे लिए पराई नही है. उसी तरह उसका गम भी मेरे लिए पराया नही है।
ःकभीं कभीं मुझे तुम्हारी कही बातें कविताओं जैसी लगती हैं।
ःवो इस वजह से क्योंकि तुम्हारे पास एक बेहद कोमल दिल है।
एक बड़े ही मखमली भूमि पर मेरे और वाल्डेट के सम्बन्ध का पौधा पनप रहा था।
जिस रास्ते पर मै बढा चला जा रहा था. वो मुझे सीधे मेरे काम पर न जाने कितने वर्षो से पहुँचाये जा रहा था। इसी रास्ते मै वापस घर भी आया करता था। दूसरे रास्तों को छोड़ कर न जाने क्यों मैने इसी रास्ते को अपनाया। एक सीधा सा सूनसान और सपाट सा रास्ता। शहर की कोलाहलों और भागादौड़ियों से दूर एक सूस्त और सन्नाटा रास्ता। इसने मुझे कभीं नही उकसाया. पर वो मेरी एक

एक बात पुरगौर बड़े धीरज के साथ सुनता है।उन दिनो भी जब मै उसे सम्बोधित तक न करता था।पर अब तो मै बिना उसे सम्बोधित किये कोई बात ही नही करता।
इस रास्ते को बर्लिन की एक से एक सुन्दर इमारतों की सायायें छूती हैं।इसके दोनो तरफ कन्धे से कन्धा सटाये अनगिनत मकान अपनी भव्यता लिये न जाने कितने वर्षो से खड़े अपने मालिकों से अपनी जीवन्तता की भीख मॉगे जा रहे हैं।उनके इर्द गिर्द के बगानों को न जाने कौन आकर इतना सजा जाता है!इन मकानों मे अहर्निश एक सन्नाटा सा छाया रहता है।अन्धेरा हुआ नही कि अचानक किसी एक मंजिल के किसी एक कमरे का लट्टू भभक कर जल पड़ता है।बगानो मे गाड़ी गई सोलर लालटेनें जल उठती हैं।
मै ज्योंही वोल्फेनस्टाईनडाम के पुल के नजदीक आता हूँ ये रास्ता मुझे अपने दोनो हॉथ फैलाये जैसे पुकारता सा होता है।कभीं कभीं हिन्डेनबुर्ग पर दोनो दिशाओं से रेंगने वाली गाड़ियॉ मुझे कई मिनटों तक अपनी जगह से हिलने तक नही देती हैं।मै अधीर सा हो उठता हूँ।मन करता है कि इन गाड़ियों को कूचलता या फिर इन्हे इधर उधर फेंक फॉक कर आगे बढ जाऊँ।चौबीस घन्टों मे मुझे बस चालीस मिनटों का ही तो समय मिलता है.जब मै इस रास्ते से कुछ बातें कर पाता हूँ।सुबह के धूँधलके मे अमूमन इस रास्ते पर मेरे अलावे बिरले ही कोई होता है।इस रास्ते के दोनो तरफ कतारों मे लगे ओक के विशाल पेंड़ो की डालियों पर बसेरा डाले न जाने कौन से पक्षी गा गाकर इस रस्ते को जगाने मे लगे होते हैं।
दोपहर को लगभग सवा दो बजे मै इसी रास्ते से वापस घर लौटता हूँ।तब तक ये रास्ता पूरी तरह जग गया होता है।बेके स्कूल के बच्चों की छुट्टियॉ हो गई होती हैं।छोटी छोटी सायकलों.रोलरों और रिकसों से पूरा रास्ता भरा रहता है।पास के ही टेनिस क्लब मे उसके सदस्य खिलाड़ियों का आना शुरू हो जाता है।दस बीस लोग अपने कुत्तों को लिए इस सड़क पर आते जाते दिखते हैं।परन्तु मै बिना किसी व्यवधान के इस रास्ते पर आते ही उससे कुछ न कुछ बताने लगाने पड़ता हूँ।कभीं किसी के बारे मे तो कभीं अपने काम के बारे मे।अपनी ख़ुशी और अपनी निराशायें भी उसे अनायास सुनाने लग पड़ता हूँ।कभीं कभीं तो उसे कहीं से आई कोई चिठ्ठी ही आद्योपान्त पढ कर सुनाने लगता हूँ।
पॉच वर्ष से ऊपर होने को आये.पर इस रास्ते पर मेरा आज तक किसी से सिर्फ इस वजह से परिचय नही हो पाया.क्योंकि मै इस रास्ते पर आते ही अपने आप मे इस कदर खो जाता हूँ कि मुझे दूसरों की फिक्र ही नही रहती है।कम से कम एक रस्ता तो है मेरे पास.जो सदा मेरी प्रतीक्षा मे अपनी ऑखें बिछाये रहता है।मै उसे एक पत्र मन ही मन पढ कर सुनाये जा रहा था।ये पत्र वाल्डेट का था.जो मुझे एक दिन पहले मोन्टेनेगरो से मिला था।पत्र कोई खास लम्बा तो नही था.फिर भी मेरे लिए उसकी यादों मे खो जाने के लिए पर्याप्त था।अब वो फिर बर्लिन वापस नही आना चाहती थी।बर्लिन को उसने सदा के लिए अल्विदा कह दिया था।उसने लिखा थाःमै सोच रखी थी कि बर्लिन के जरिये मै अपने बच्चे को पा लूँगी।एक तरह से देखो तो मेरी हर सोची और चाही गई बात को मेरे ईश्वर ने मेरी हठधर्मिता समझी।अपने गॉव के जिस लड़के से मै प्यार करती थी.वो हमारे फार्म मे मैनेजर था।मै उससे विवाह भी करना चाहती थी।ये विवाह पिताजी के जीते जी असम्भव था।उनके गुजरने से पहले मेरा विवाह एक दूसरे से तय हो चुका था।ये पहली सजा है।लेओन को मैने अपने पति पर थोपना चाहा।उसने मुझे सिर्फ तलाक ही नही दिया।मुझसे ग्योरनी भी छुड़वाया।ये दूसरी सजा है।समर्थ होते ही मै लेओन को अपनाना चाही और वो मुझसे छीन लिया गया।ये तीसरी सजा है।हमारे जीवन के रास्ते हम नही बल्कि हमारे ईश्वर ही निर्धारित करते हैं।इस जीवन मे मेरा बर्लिन आना सम्भव नही दिखता।तुम ही कभीं समय निकाल कर ग्योरनी आओ न!ः
रह रह कर मुझे अपने काम का पहला दिन याद आ रहा था और खास करके वो सुबह.जब मेरा चीफ एक एक करके मुझे काम के कलिगों से मिलवाये जा रहा था।जब वो मुझे लिए वाल्डेट के कमरे मे आया.तो वो अपनी मेज पर झुकी किसी एक फाईल मे व्यस्त थी।जब उसे हमारे आने की आहट मिली.तो हल्के से उसने अपनी नज़रें उठाईं।एक दुबली पतली लम्बे कद की लड़की।घने बाल .हरी ऑखें लम्बी सूथरी उँगलियॉ।
एक दिन काम के बाद मै उसे उसकी गाड़ी तक छोड़ने गया था।मै उससे पूछने ही वाला था कि वो आज काम काम पर इतनी असहज क्यों थी!उसकी तबीयत वगैरह तो ठीक रहती है न!उसने अपनी पर्स से एक फोटो निकाल कर मुझे पकड़ा दिया।ये फोटो एक यही कोई चार पॉच वर्ष के बच्चे का रहा होगा।एक गोल मटोल बच्चा रूसी टोपी पहने।
ःबड़ा प्यारा बच्चा है।नस्तायाशी इवान है।कौन है ये!
ःये मेरा बेटा है।थोड़ा समय है तुम्हारे पास!मुझे तुमसे कुछ बातें करनी है।
ःहॉ हॉ।समय ही समय है मेरे पास।
ःफिर आओ क्रूमे लान्के चलते हैं।
ःचलो
मुझे लिए वाल्डेट क्रूमे लान्के आई।एक सूनसान से पार्क मे हम जा बैठे।बैठे ही थे कि वाल्डेट कहने लगी कि उसे मेरी मदद चाहिये।
ःकोई दूसरा होता.तो शायद मै पूछता कैसी मदद!पर मुझे वाल्डेट से क्या पूछना था!
ःमेरे बेटे का नाम लेओन है।वो मेरी बहन के संरक्षण मे रह रहा है।तीन वर्ष पहले मेरी मॉ भी गुजर गई।लेओन आठ वर्ष का है।उसकी तबीयत ठीक नही रहती है।रह रह कर गिर पड़ता है।मेरी बहन उसे हजारों डॉक्टरों को दिखा चुकी है.पर कोई फायदा नजर नही आ रहा है।उसके ऑखों की ज्योति दिन ब दिन क्षीण होती चली जा रही है।मै उसे बर्लिन बुलाना चाह रही हूँ.पर मेरे पति राजी नही हैं।
ःतुम्हारे पति क्यों नही राजी है!लेओन उनका भी तो बेटा है।
ःलेओन उनका बेटा नही है।मेरे पति जर्मन हैं।जिनसे मेरा विवाह जाग्रेत्स मे हुआ था.उन्होने मुझे तलाक दे दिया।अपने ही बेटे को उन्होने नजायज माना।बड़ी थू थू मुझ पर और मेरे परिवार पर हुई।ग्योरनी मे मेरा जीवन बड़ा कलहमय सा हो गया था।मुझे सबसे बड़ा दुःख इस बात का था कि मेरी सास ने ही नही.बल्कि मेरी मॉ ने भी मुझे दोषी माना।जब लेओन तीन वर्ष का था.तब सिमेन्स के

एक छ महीने के कान्ट्रैक्ट पर मै बर्लिन आ गई। लेओन मेरी बहन के संग रह गया। ये छ महीने देखते ही देखते गुजर गये। वीजे की अवधि बढवाने के लिए मैने सिमेन्स के एक अधेड़ और विधुर भौतिकशास्त्री से विवाह कर लिया। उनका नाम यूर्गन है। बर्लिन मे मै उसी के साथ रहती हूँ। अब मेरे पास एक परमानेन्ट नौकरी है, अनलिमिटेड जर्मनी का वीसा है, एक तरह से सब कुछ है। बस लेओन मेरे पास नही है और वो बीमार है।

ःएक बात तो बताओ वाल्डेट!लेओन को क्या वाकई तुमने अपने यूगोस्लावियन पति से पाया था!बस सच सच बताना। खोना और पाना तो जीवन मे चलता ही रहता है, पर एक झूठ पर तुम कितने भी रंगो की ब्रूशें फेर लो, उसे तुम छुपा नही सकती हो। उससे दूर तुम भाग भी नही सकती हो। मेरे जीवन मे इससे बड़ा दूसरा कोई अपराध नही हैःएक मधुर क्षण जिसमे दो शरीर और दो आत्मायें एकाकार होती है और जिस क्षण मे एक अनाम विश्वनागरिक का अभ्यूदय होता है, उस पर समाज के मापदन्डों, और परम्पराओं से डर कर पर्दा डालना और उसे न स्वीकारना।

वाल्डेट एकबारगी निःशब्द हो चली थी। न जाने क्यों मेरा मन कह रहा था कि इन निःशब्द क्षणों मे वो अपने आप मे सच बोलने का साहस मात्र ढूँढ रही थी।

जब मुझे वाल्डेट के मुँह से ये पता चला कि लेओन उसका बेटा तो है, पर उसे उसने अपने विवाहित पति से नही, बल्कि अपने बचपन के एक साथी से पाया है, तब एकबारगी मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे विश्वासों के पौधे को किसी ने जड़समेत उखाड़ कर राह के किनारे लोगों के पैरों तले कूचलने को फेंक दिया हो।

पर मै वाल्डेट के संग मित्रता की राह पर काफी आगे बढ चुका था। अब लौटने का अर्थ उसकी नज़रों मे ही नही, बल्कि अपनी नज़रों मे भी गिरने जैसा था। किसी को सजा देना या फिर उसे अन्यथा मे लेना मेरे स्वभाव मे बचपन से ही नही था। फिर इस तरह के अधिकार हमे ईश्वर से मिले भी तो नही हैं।

लेओन एक तुर्की विमान से बर्लिन आने वाला था। शनिवार का दिन था। वाल्डेट के संग मै भी टेगल एयरपोर्ट उसे लिवाने गया था। एयरपोर्ट पर हमे पता चला कि विमान के आने मे एक घन्टे की देरी है। हम गेट सतरह के सामने लगी एक बेंच पर जा बैठे। बात बढाने के विचार से ही मैने वाल्डेट से पूछाःयूर्गन को पता है कि आज लेओन आना वाला है!

ःहॉ

ःएयरपोर्ट वो भी आएगा!

ःपता नहीं।

ःएक बेहद अविदित भविष्य तुम्हारे सामने है।

ःये सबकुछ लेओन के ऑपरेशन पर निर्भर करता है। अगर ये ऑपरेशन कामयाब रहा, तो मै एक अपना अपार्टमेन्ट लेकर लेओन को बर्लिन बुला लूँगीं। अगर नही, तो मै ग्योरनी वापस चली जाऊँगीं। इन दोनो हालतों में मै यूर्गन को तलाक देने जा रही हूँ।

एक बार अचानक वाल्डेट काम पर नही आई थी। पता चला कि उसकी तबीयत खराब हो गई है। दो तीन दिनों के बाद मुझे पता चला कि वो बेरिन्ग हॉस्पीटल मे भर्त्ती है और उसे ब्रेस्ट कैन्सर हो गया है। उसके बारे मे जानने का मेरे पास कोई दूसरा और तीसरा स्रोत नही था। सिर्फ एक ही रास्ता बचा था कि मै खुद उससे मिलने जाऊँ। ट्रेवेस का बताया कि वाल्डेट का पति बड़े शक्की स्वभाव का है, मुझे उससे मिलने से रोक रखा था। ये मै बिल्कुल नही चाहता था कि मेरी बजह से वाल्डेट की निजी जिन्दगी मे किसी भी तरह का कोई झन्झावात आये। कई बार मै बेरिन्ग गया, पर वाल्डेट से मिलने नही जा सका। अस्पताल मे उसके बारे मे किसी से पूछने का कोई फायदा नही था। शायद ही ऐसा कोई दिन रहा होगा, जब वाल्डेट की मुझे याद न आई हो। ।देखते ही देखते छ सप्ताह गुजरने को आए। एक दिन मै अपने डिपार्टमेन्ट के इन्ट्रेंस का कोड मिला ही रहा था कि अपने कन्धे पर पड़े एक स्पर्श से चौंका। पलट कर देखा, तो वाल्डेट खड़ी थी। सहसा ऑखों पर विश्वास ही नही हुआ। इससे पहले कि मै उससे कुछ पूछता, डिपार्टमेन्ट के दूसरे कलिग्स उसे जा घेरे। जो कुछ मै सुन पाया, वो बस इतना ही था कि अब वो बिल्कुल स्वस्थ है।

काम मे मेरा मन जरा भी न लग रहा था। वाल्डेट न जाने किन फाईलों मे जूझी हुई थी। मेरा मन न जाने उससे क्या क्या पूछने जानने और बताने को कर रहा था!दोपहर के ब्रेक मे मुझसे न रहा गया। नॉक करके उसके चेम्बर मे गया तो कहने लगीःये तुमने नॉक क्यों किया!

ःऐसे ही कर दिया। बाहर मौसम कुछ खास तो नही है। फिर भी मेरे साथ घूमने चल सकोगी!

बिना कुछ कहे, वो वार्डरोब से अपना जैकेट निकाली और कन्धे पर डालते हुए बोलीःचलो, पर ये अचानक तुम्हे मेरे साथ बाहर घूमने जाने की कैसे सूझी!

ःऐसे ही। मै जब भी तुम्हारी एक याद अपने से परे धकेलता हूँ, तो तुम्हारी सैकड़ों यादें मुझे आ घेरती हैं। तब तुम्हारे साथ रहने का बड़ा मन करता है।

रास्ते में उससे ऐसे ही पूछ बैठाःकौन सी थिरैपी तुम्हे दी गई थी!

ःमुझे किसी तरह की थिरैपी नही दी गई थी। एक ब्रेस्ट हटा दिया गया है।

मुझसे अब कुछ और पूछा न गया।

आज सुबह जब इन्ट्रेंस पर वाल्डेट दिखी थी, तब मुझे उसमे सबकुछ समान्य ही दिखा था। मुझे उसकी सुन्दरता कहीं से भी असंतुलित नही दिखी थी। हम मौन साथ साथ एक पतली सी पगडंडी पर बढे जा रहे थे। दॉये बॉये उग आये जन्गली पौधे अपने आकर्षक फूलों से जा लदे थे। लॉन के बीचोबीच लगा लगा क्रस्तानियन दूर से ही मेरा मन मोहे जा रहा था। कुछ पौधों के पत्ते ही इतने आकर्षक होते है कि उन्हे फूलों की कोई आवश्यकता ही नही होती है।

अनायास हमे दूर से लेओन आता दिखा। लेओन एक ट्राली पर अपने सूटकेस पर बैठा आहिस्ता आहिस्ता हमारी तरफ बढा चला आ रहा था। उसकी ट्राली एक एयरपोर्ट आफिसर धकेले जा रहा था। वाल्डेट को वो तत्काल न पहचान सका। अपनी भाषा के अलावे

उसे थोड़ी बहुत रसियन आती थी।एक गोल मटोल सा बच्चा, एक काला ओवरकोट और एक काली रसियन टोपी पहने।न जाने वो क्यों, वो अपनी कही बात फिर से एक बार दुहराया करता था।जब उसे ये लगता था कि उसे अनसुना किया जा रहा है, तो तत्काल जैकेट का एक कोना पकड़ कर खींचने लग पड़ता था।एक मुस्कराहट उसके पास अभी भी थी, पर उसकी हँसी उससे छीन ली गई थी।उसे हँसते मैने एक बार भी नही देखा।

वाल्डेट ने उसके लिए हमारे अस्पताल के परिसर मे ही बने गेस्टहाऊस मे एक कमरा बुक करवा रखा था।इस कमरे मे उसने अपने लिए भी एक बेड लगवा रखा था।

लेओन का आई टयूमर हमारे पूरे डिपार्टमेन्ट को स्तव्ध कर के रख दिया।हमसे ज्यादे पैसा जमा नही किया जा सका, पर उसके ऑपरेशन को प्रो फ्योस्टर को अपने हॅाथ मे लेना था।हमारे डिपार्टमेन्ट की नेक्स्ट टू चीफ एक बहुत ही सज्जन महिला थी।उन्ही के प्रयास से हमारे हाऊस ने तमाम खर्चातों मे दबाके कटौतियॅा की और बाकी के खर्च वाल्डेट पर इनस्टालमेन्ट की शक्ल मे डाले, जो चौवन हजार मार्क का था।अब लेओन का जीवन अप्रत्यक्ष प्रो फ्योस्टर के हॅाथों मे था।हमारे अस्पताल मे एक यही वार्ड है, जहॅा अपने देश की गरीबी मे पलते छोटे छोटे बच्चों की बेशुमार तसवीरें दीवारों पर टॅगी हैं।मैने सुन रखा था कि प्रो फ्योस्टर कोलकाता मे कहीं एक शिविर भी खोल रखे हैं, जहॅा छोटे और अतीम बच्चों के ऑखों का मुफ्त मे इलाज किया जाता है।कई दूसरे जर्मन डाक्टर्स भी उनके इस प्रोयेक्ट मे काम करते हैं।

वाल्डेट ने छुट्टियॅा ले रखी थीं, इस वजह से मै छुट्टी नही ले सकता था।लेओन को हमारे अस्पताल के चिल्ड्रेन वार्ड मे भर्ती कर लिया गया था।उसकी तमाम जॉचें पूरी हो चली थीं।प्रो फ्योस्टर एक छोटे विजिट पर अमेरिका गये हुए थे।उनके वापस लौटने का इन्तजार हो रहा था।काम के बाद बिना किसी अपवाद के हमारा सारा डिपार्टमेन्ट लेओन से मिलने जाता था।फल फूलों और प्रेजेन्टों से उसका कमरा भरता जा रहा था।वाल्डेट अब हमारे गेस्टहाऊस मे ही रहने लगी थी।दिन भर वो लेओन के बिस्तर से लगी बैठी रोती ही मिलती थी।मै भी चुपचाप एक कुर्सी उसके बगल मे लगा कर निर्निमिष लेओन को निहारने बैठ जाता था और जब तब वाल्डेट से कुछ खाने की जिद़ करता रहता था।ठीक हमारे सामने लेओन किसी नशे की गोली की गिरफ्त मे अर्द्धसोया अपने चेहरे पर आई आकृतियों से खेलता रहता था।मुझसे ही नही, वल्कि डिपार्टमेन्ट के दूसरे लोगों से भी वो काफी घूल मिल गया था।पलक झपकते रात के ग्यारह बजने को आते थे।हल्के से वाल्डेट की बॉह सहला कर मै उनडिनेस्ट्रासे पर आ जाता था।अब मै इस रास्ते से बातें नही करता था, सिर्फ लेओन के सफल ऑपरेशन की कामनायें करता था।

ये बुद्दवार की शाम थी।रात के दस बजे लेओन की दाहिनी ऑख का ऑपरेशन होने वाला था।लेओन ऑपरेशन हॉल मे जा चुका था।दूसरे कलिग्स भी वाल्डेट का ढाढस बॅधवा कर जा चुके थे और अपनी प्रार्थनाओं की रागों मे जा लिपटे थे।वाल्डेट चिल्ड्रेन वार्ड के बरामदे मे एक खुली खिड़की की तख्त पर अपनी केहूनी टिकाये आसमान मे उगे समस्त तारों से सम्भवतया ये विनती किये जा रही थी कि वो जहॅा भी हैं, वहीं टिके रहें, टूट कर जमीन पर न आयें।मै भी उसके बगल मे जाकर चुपचाप खड़ा हो गया।अच्छा या बुरा ये समाचार हमे इसी वार्ड के फोन पर मिलने वाला था।अमूमन इस तरह के ऑपरेशन थोड़े लम्बे होते है।तीन चार घन्टे तो लग ही जाते हैं।ऑपरेशन हॉल मे जाने से पहले प्रो फ्योस्टर ने वाल्डेट को अपने चैम्बर मे बुलवाया था।मै भी साथ ही था।ये ऑपरेशन कुछ ज्यादे ही रिस्की था।वाल्डेट को अपने हस्ताक्षर देने पड़े थे कि ऑपरेशन की असफलता के लिए वो प्रो को दोषी नही मानेगी।

ये सुनना भर था और वाल्डेट ऑसुओं मे नहा गई थी।एक अजीब सा सन्नाटा इस वार्ड मे छाया हुआ था।इसके फ्लोर जो दिन भर न जाने कितने कदमों से कूचले जाते होंगे, थक कर लगभग पसर चले थे।वार्ड के छोटे बच्चे न जाने कब के सो चुके थे।वार्ड की हेड नर्स अपने चैम्बर मे बैठी किसी फाईल मे व्यस्त थी और दूसरी दो किन्ही पत्रिकाओं मे।ये सभी आके वाल्डेट का ढाढस बॅधा जाती थीं। ।ये सब लेओन का ही कमाल था।बिना हलो कहे वो आगे बढता ही न था।निर्भय सबके पास चला जाता था।सबका हाल चाल पूछ आता था।नर्से कहती थीं कि इस तरह का आज्ञाकारी पेसेन्ट पहली बार उनके वार्ड मे आया है।

वार्ड मे आया हर टेलीफोन हमे अर्न्ततम तक झकझोर जाता था।वार्ड की नर्से हमे अपनी ही तरफ आती दिखती थी, रह रह कर ऐसा भ्रम होता था।ऐसे ही किसी एक टेलीफोन पर लेओन का समाचार आने वाला था और फिर ये समाचार इन्ही नर्सो मे किसी एक से हमे मिलने वाला था।वार्ड की घड़ी मे रात के ढाई बजने को आये थे।दिन भर की भूखी प्यासी वाल्डेट की ऑखो से नीदें भी कोसो दूर थीं।मुझे सिर्फ एक ही भय भयभीत किये हुए थाःअगर कुछ ऊॅच नीच हो गया, तो मेरे लिए वाल्डेट को सम्हालना सम्भव न हो सकेगा।कई बार उसे कुछ खाने को कहा।एकाध घूँट पानी ही पी ले।थोड़ी देर के लिए ही सही, वार्ड मे जा कर लेट ले।वाल्डेट की ऑखें शून्य और शब्दहीन हो चली थीं।लगभग जाते लेओन को पुनः पा लेने की खुशी या फिर उसे सदा के लिए खो देने का दुख एक समान ही अवस्था रही होगी वाल्डेट के मन मे।न जाने वो क्या सोचे चली जा रही थी!बिना आठ रसों के एक काव्य की रचना सम्भव नही मानी जाती है।हमारा जीवन भी तो एक काव्य ही है।पर काव्य के विपरीत हमे सिर्फ इसका पता नही रहता है कि आने वाले अध्यायों मे हमारे ईश्वर को कौन सा रस रास आने वाला है।

इस दरम्यान न जाने कितनी बार हेडनर्स के चैम्बर की घन्टी घरघराई होगी।तभी हमे एक नर्स तेज कदमो से हमारी ओर आती दिखी।बड़ा मुश्किल था उसके चेहरे को पढ पाना।लगभग जाते लेओन को प्रो फ्योस्टर मौत के मुॅह से छीन कर वाल्डेट को वापस कर चुके थे।ये एक कामयाव ऑपरेशन था।लेओन को ऑवजर्वेशन वार्ड मे भेजा जा चुका था।

उनडिनेस्ट्रासे पर रास्ते भर मै बस यही दुहराता रहा कि ईश्वर अपने आस्थावानों की परीक्षा मात्र लेता है।उन्हे सजा नही देता है।

लेओन के पास जर्मनी मे तीन महीने का वीसा था।हमारे अस्पताल मे वो डेढ महीने रहा।प्रो फ्योस्टर की वजह से उसे वार्ड मे हर तरह की सुविधा मिली हुई थी।यहॅा तक कि उसे इस वार्ड मे एक स्पेशल कमरा मिला हुआ था।वाल्डेट के लिए भी अलग से एक बेड लगवा दिया गया था।ठंढ की वजह से वाल्डेट उसे अस्पताल के परिशर मे घूमाने नही ले जा सकती थी पर इस वार्ड मे बच्चों के लिए अलग से एक हॉल था, अनगिनत खिलौनों और बच्चों की कितावों से भरा।अस्पताल की ही एक प्रतिपालिका बच्चों को तरह तरह के खिलौने बनाना सिखाती थी।वगैर जर्मन भाषा जाने लेओन वार्ड के दूसरे बच्चों से घूल मिल गया था।प्रो फ्योटर समय

निकाल कर रोज ही उससे मिलने आते थे।छुट्टी के बाद हमारा पूरा डिपार्टमेन्ट ही इस वार्ड मे जा पहुँचता था।वाल्डेट के ऑखों का ये तारा हम सबकी ऑखों का तारा बन चुका था।डाः लॉग तो उसे अपने गोद से उतारने का नाम ही नही लेती थीं।लेओन के प्रति दूसरों का मोह देख कर वाल्डेट अक्सर रोने लग पड़ती थी।कभीं कभीं मै भी लेओन को रोलचेयर पर बिठा कर ऐसे ही दूसरे वार्ड दिखाने ले जाया करता था।अपनी टूटी फूटी रसियन भाषा मे वो ग्योरनी के बारे मे बताया करता था।वाल्डेट की चचेरी बहन को वो मामा कहके बुलाता था और वगैर इस मामा के न तो उसका कोई वाक्य शुरू होता था और न खत्म होने का नाम ही लेता था।अपने मौसा को वो उनके नाम लेख से बुलाता था।ग्योरनी गॉव मे उसके तमाम दोस्त थे और उनका अभाव उसे बेहद खलता था।ग्योरनी आने का आमंत्रण मुझे उससे कई बार मिल चुका था।
वाल्डेट और उसकी तमाम समस्याओं को मै इतना व्यक्तिगत ले लिया था कि अब मेरे पास अपनी व्यक्तिगत भावनाओं के लिए कोई समय ही नही था।कुछ भावनायें समय और परिस्थिति के साथ निस्पृह और अपेक्षाविहीन भी हो जाती हैं।मूख्य विषय से भटक कर मै कहीं और जा चुका था।
तीसरे महीने के अन्त मे लेओन को मोन्टेनेगरो वापस जाना पड़ा।ये भी एक अदभूत विदाई थीःवाल्डेट रोये जा रही थी और लेओन ग्योरनी वापस पहुँचने के लिए अधीर हो चला था।अगर उसके पास पंख होते.तो वो कब का फूर्र ग्योरनी उड़ गया होता।
लेओन के जाने के बाद वाल्डेट के सामने अब मात्र दो लक्ष्य थेःअपने पति यूर्गन से मुक्ति और लेओन की सदा के लिए ग्योरनी से वापसी।ये दोनो काम इतने आसान नही थे।चौवन हजार मार्क का कर्ज वाल्डेट के सामने खड़ा था।नये मकान का किराया भी कुछ कम नही था।यूर्गन ने अपने हॉथ समेट रखे थे।कुछ व्यक्तिगत कर्ज भी वाल्डेट के सर पर था।बर्लिन के वकील भी मानवीय और सस्ते नही है।वाल्डेट दिन ब दिन रिजर्व होती चली जा रही थी।मुझसे वो किसी तरह की आर्थिक सहायता नही चाहती थी।एकाध बार कुछ दिनो के लिए उसे कुछ पैसे मॉगने पड़े थे.पर वो उन्हे समय से पहले ही मुझे वापस कर दी थी।वाल्डेट के लिए एक साईन किया चेक सदैव मै अपने पास रखता था और अक्सर उससे पैसों के बारे मे पूछा करता था।जबाब मेःःएक साये की तरह तुम मेरे साथ रहते हो।यही क्या कम है मेरे लिए!दिखते ही देखते तुम मेरे सबसे अच्छे दोस्त बन बैठे।अगर तुम नही होते.तो मै कब की टूट गई होतीः सुनना पड़ता था।
जिस दिन हमे लेओन के गुजरने का समाचार मिला.उसी दिन वाल्डेट ने रिजाईन कर दिया।डाः लॉग उसे समझा समझा कर हार गई ं।ग्योरनी वापस लौटने का उसने अटल फैसला कर लिया था।अब तक का कमाया और सम्हाला जीवन उसके लिए मात्र ताश के पत्तों से बनाया एक महल था।एक ही फूँक से मेज पर बिखर गया।बर्लिन मे वो मात्र तीन दिन और रही।अपना अपार्टमेन्ट वो अपनी एक परिचिता को दे दी।अपनी गाड़ी भी उसने उसी को बेच दी।वापस जाने से एक दिन पहले फार्मेलिटिस के कुछ कागज वो मुझे देने आई थी।थोड़ी देर मेरे ड्राईन्गरूम मे भी बैठी।अब वो मुझसे भी मात्र कुछ ही शब्दों मे बातें करती थी।वाल्डेट के तमाम दर्द उसके सीने मे जम से गये थे।उसने खाना पीना भी लगभग छोड़ रखा था।बहुत कहने सुनने पर जूस के ग्लास पकड़ा करती थी।
डिपार्टमेन्ट के कई लोग एयरपोर्ट पर आना चाहते थे.पर उसने सभी को मना कर दिया।इस विदाई का दुख और गौरव अकेले मेरी किस्मत मे लिखा था।मै एक टैक्सी लेकर उसे लिवाने गया था।सामान के नाम पर उसके पास मात्र एक सूटकेस था।पूरे रास्ते मेरे कन्धे पर सर रखे वो रोती रही।एयरपोर्ट पर भी उसकी ऑखें अनवरत बरसती रहीं।जब चेक इन का समय आया.तब वो फूट फूट कर रोने लगी।
ःमुझे भूल तो नही जाओगे!यही उसका आखिरी सवाल था।
जवाब मे मेरी आवाज भी भरभरा गईःयही मै तुमसे पूछना चाहता था।
वाल्डेट पागलों की तरह मेरा माथा चूमे जा रही थीः
वाल्डेट की याद मुझे अक्सर आती है।मै आनन फानन अपने मन की व्यवस्था और उसकी सजावट को ठीक करने लग पड़ता हूँ।अपने अव्यवस्थित मन मे वाल्डेट की यादों का आगमन मुझे बड़ा संकोचित कर जाता है।
प्रमोद कुमार सिंह
बर्लिन
सात अगस्त दो हजार दस।